वीरता की मिसाल, जांबाज जनयोद्धा व जनता की प्यारी नेता

शहीद कॉमरेड रनिता (रामको हिचामी)

को लाल-लाल सलाम!

गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

दण्डकारण्य

वीरता की मिसाल, जांबाज जनयोद्धा व जनता की प्यारी नेता शहीद कॉमरेड रनिता (रामको हिचामी) को लाल-लाल सलाम!

उत्तर गढ़चिरोली डिवीजन में माकड़चुवा एक छोटा सा आदिवासी गांव है, जिसमें केवल पांच घर हैं। 20 अगस्त 2011 की सुबह-सुबह जब गांव उठा तो उसने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि यहां पर एक बड़ा घमासान होने वाला है; कि उनके मकई के खेत बन जाएंगे जंग-ए-मैदान; कि हरे-हरे अधपके भुट्टे हो जाएंगे लहूलुहान; कि फिजा में फैल जाएगी बारूद की गंध; कि धरती हो जाएगी बंजर; कि उनकी प्यारी नेता, शुभचिंतक व उनके दुख-दर्द की सहभागिनी दीदी रण में धराशायी हो जाएगी। लोग नींद से उठ रहे थे। उनको पता ही नहीं था कि सैकड़ों कोबरा, सी-60 और पुलिस के दरिंदों ने रात के अंधेरे में ही गांव को घेर रखा था।

जिस तरह गांव वालों को नहीं पता था, उसी तरह चातगांव एरिया क्रांतिकारी जनतना सरकार की अध्यक्ष कॉमरेड रनिता और उनके साथ घूम रहे पोटेगांव एलओएस (स्थानीय गुरिल्ला दस्ता) के अन्य छह गुरिल्लों को भी इसकी भनक नहीं थी। कॉमरेड रनिता एलओएस के साथ नये-नये गांवों में सभाएं करने, क्रांतिकारी जनतना सरकारों का गठन करने, ग्रीनहंट के नाम से जनता पर जारी दमनात्मक युद्ध के खिलाफ प्रचार करने और जनता को भयमुक्त करने का कार्यक्रम लेकर घूम रही थीं। शहीद सप्ताह और 15 अगस्त काला दिवस पर कई सभाएं उन्होंने कीं। जनता पर दमन को तेज करने के बुरे इरादे से इलाके में सरकार द्वारा जारी झूठे सुधार कार्यक्रमों का पर्दाफाश करते हुए जनता में प्रचार किया। उसके बाद 19 अगस्त की रात को माकड़चुवा के जंगलों में सभी कॉमरेडों ने डेरा डाला। अगले दिन जनता को प्रस्तावित कार्यक्रम की सूचना देने और उनका हालचाल जानने के इरादे से कॉमरेड रनिता दो अन्य गुरिल्लों को लेकर सुबह-सुबह माकड़चुवा गांव में

दाखिल हुईं।

गांव के अंदर दो घर वालों से मिलीं और उनका हालचाल पूछा। फिर वह तीसरे घर की तरफ बढ़ रही थीं तभी जनता ने खबर दी – ''दीदी, पुलिस चारों तरफ से गांव को घेरकर आगे बढ़ रही है।'' दरअसल पहले से घात लगाए बैठी पुलिस ने गांव में घुसते हुए हमारे कॉमरेडों को देख लिया था। तुरंत रनिता ने अपने कॉमरेडों को घेरा तोड़कर गांव से निकलने का आदेश दिया। तीनों कॉमरेड गांव से निकलने को तैयार हुए थे। उस वक्त सुबह के 7 बज रहे थे। आधुनिक हथियारों से लैस पुलिस के एक दस्ते के साथ तीन गुरिल्लों की मुठभेड़ शुरू हुई। तुरंत ही भीषण गोलीबारी शुरू हो गयी। एक तरफ थे सौ से ज्यादा प्रशिक्षित कमाण्डो बल जिनके पास थे एके–47, एसएलआर, इंसास, मोर्टार, एलएमजी, ग्रेनेड आदि घातक हथियार। उनके सामने थे हमारे तीन कॉमरेड जिनके पास थे मामूली किस्म के हथियार। सिर्फ कॉमरेड रनिता के पास थी एक .303 रायफल जो अरसा पहले पुलिस बलों से छीनी हुई थी। दो कॉमरेड फायरिंग करते हुए गांव से निकल जाने में कामयाब हो गए हालांकि पुलिस ने दूर तक उनका पीछा किया। लेकिन कॉमरेड रनिता को वहां से निकलने का मौका नहीं मिला। घर के पास ही छोटा सा मकई का खेत था, जिसके अंदर वह जा छिप गईं। वह एक एकड़ से भी कम का खेत था।

हमारे साथियों का पीछा करते हुए जंगलों में जाने वाले पुलिस बल फिर उसी घर के पास आ गए। आने के बाद गांव वालों के साथ मार–पिटाई करने लगे और धमकियां देने लेगे। पुलिस वालों को यह नहीं पता था कि उनके बगल में मौजूद मकई के खेत के अंदर एक गुरिल्ला नारी छिपी हुई है। पुलिस वाले जब खेत के आसपास मंडरा रहे थे तो कामरेड रनिता उनको ठीक से देख पा रही थीं। उन्होंने निशाना साधते हुए अपनी .303 रायफल का मुंह खोल दिया। पहली ही गोली से एक कमांडो औंधे मुंह गिर गया और वहीं पर दम तोड़ गया। लेकिन कमांडों को यह नहीं समझ आया कि गोली कहां से आयी थी। सभी मरे हुए कमांडो को उठाने के लिए जमा हो गए। कामरेड रनिता ने और एक मौका ताड़कर फिर निशाना साधते हुए एक के बाद एक

गोली दागनी शुरू कर दी। एक और कमांडो को ढेर हो गया। वहीं दो और बुरी तरह से घायल हो गए। तब जाकर उनको समझ में आया कि मकई के खेत में कोई गुरिल्ला छुपा हुआ है। उसके बाद एक कमांडो ने बुलेटप्रूफ जैकेट, हेलमेट आदि पहनकर खेत में घुसने की कोशिश की। कामरेड रनिता ने बहुत ही सूझबूझ और धैर्य का परिचय देते हुए उसको आगे आने दिया। जब वह काफी नजदीक आ गया तो सीधे माथे में गोली मारी और उस कमांडो का काम तमाम कर दिया। सी-60 और कोबरा कमांडों का घमंड वहीं पर चकनाचूर हो चला। वे सब उल्टे पांव अपने कवरों में भाग गए। आगे बढ़ने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहे थे। दूर से ही गोलियां बरसाते रहे और रेडियो सेटों पर अपने आकाओं से मदद की गुहार लगाते रहे। दुश्मन की वॉकीटॉकियां लगातार अतिरिक्त मदद के लिए चिल्ला रही थीं। अपने आकाओं को बताते रहे कि सैकड़ों माओवादियों से माकड़चुवा में 3 घंटे से मुठभेड़ जारी है और उनको तुरंत मदद की जरूरत है। करीब 10 बजे तक 6-7 माईनप्रूफ गाड़ियों के अलावा दर्जनों वाहनों में सैकड़ों अतिरिक्त सी-60 कमांडो, कोबरा व जिला पुलिस बल के जवान पहुंच गए। गौर करने वाली बात यह भी है कि पोटेगांव पुलिस कैंप माकड़चुवा से केवल चार किलोमीटर की दूरी पर है जहां से गोलीबारी की आवाज साफ तौर पर सुनी जा सकती थी। लेकिन 'बहादुर' कोबरा बलों को वहां से घटनास्थल पर पहुंचने में पूरे तीन घंटे लग गए। हवा में हेलिकॉप्टर चक्कर काटने लगे थे। माकड़चुवा के आस-पड़ोस के पोटेगांव, हेटी, ताड़गुड़ा आदि जगहों में भी दुश्मन ने अपने बलों को तैनात कर दिया। कुल मिलाकर करीब 600 की संख्या में कमाण्डो बलों ने पूरे इलाके को सैनिक छावनी में तब्दील कर दिया मानों वहां पर बड़ा युद्ध छिड़ गया हो। आसपास के खेत दुश्मन बलों के लौह जूतों तले रौंद दिए गए। आसपास के गांवों की जनता में दहशत फैलाई गई।

अतिरिक्त मदद पहुंचने के बाद साढ़े दस बजे एक बार फिर दुश्मन बलों ने मकई के खेत की तरफ बढ़ने की हिम्मत जुटाई। एक बार फिर गोलियां बरसाते हुए आगे बढ़े लेकिन फिर एक बार उनको धूल चाटनी पड़ी। कॉमरेड रनिता ने फिर अपनी .303 रायफल से गोलियां दागीं जिसमें दो कमाण्डो और गंभीर रूप से घायल हो गए। कमांडों को फिर उल्टे पांव भागना पड़ा।

माओवादियों के उन्मूलन के नाम से आंध्रप्रदेश के ग्रेहाउण्ड्स बलों की तर्ज पर जंगल वारफेर व काउण्टर इंसर्जेन्सी में प्रशिक्षित किए गए सी–60 व कोबरा कमाण्डो बलों का 'पराक्रम' एक दुबली–पतली काया वाली आदिवासी महिला गुरिल्ला के सामने पानी–पानी हो गया।

तीसरी बार कमांडों ने ग्रेनेडों की बरसात शुरू की। एक के बाद एक लगभग 25 ग्रेनेड फेंके। हरा–भरा मकई का खेत का एक बड़ा हिस्सा जल गया। लेकिन कॉमरेड रनिता ने रायफल को मजबूती से थामे रखकर खेत के अंदर मौजूद एक गड्ढ़े में अपने को छिपाए रखा जिससे वह बमों की बरसात और गोलियों के तूफान को भी झेल सकीं। दुश्मन बलों ने गांव वालों को जमा कर खूब पीटा और धमकाया। दुश्मन बलों को अपने मरे हुए जवानों की लाशों और घायलों को हेलिकाप्टर से भेजने आदि में धीरे–धीरे शाम होने लगी थी। भाड़े के कमाण्डो अब सोचने लगे थे कि अगर अंधेरा हो गया तो वे कुछ नहीं कर पाएंगे। गांव के जिस किसान का वह खेत था उस व्यक्ति को 'मुठभेड़' में मार डालने की धमकी देकर मकई के खेत को तुरंत काटने के लिए बोला ताकि छिपी हुई गुरिल्ला को चिन्हित करके गोली मार दी जा सके। जब मकई काटा जा रहा था तो एक कमांडो पेड़ पर चढ़कर लगातार उस किसान की निगरानी कर रहा था। अंत में जब मकई को काट दिया गया तब कामरेड रनिता उनकी नजर में चढ़ गयी तो उसने निशाना लगाते हुए पेड़ के ऊपर से गोलियां दाग दीं। इस तरह गढ़चिरोली जिले के शोषित अवाम की प्यारी बेटी कामरेड रनिता ने दम तोड़ दिया। उनकी लाश के पास रायफल के अलावा 19 कारतुस मिले थे। यानी उन्होंने इस पूरी लड़ाई में सिर्फ 14 गोलियां खर्च कीं।

सुबह 7 बजे से शाम के 3 बजे तक इस अकेली गुरिल्ला पर निरंतर गोलियां बरसती रहीं। जिस माटी से पैदा हुई उसी माटी को अपने लहू के आखरी कतरे तक अर्पित कर कामरेड रनिता ने अपनी जान कुरबान कर दी। गढ़चिरोली की धरती पर कॉमरेड रनिता ने जिस बहादुरी का परिचय दिया, अदम्य साहस की जो मिसाल पेश की, उससे दण्डकारण्य का माथा गर्व से पर्वत सा ऊंचा हो गया है। उनकी शौर्यपूर्ण शहादत की खबर जंगल की आग

की तरह न सिर्फ गढ़चिरोली जिले में, बल्कि समूचे दण्डकारण्य की जनता में फैल गयी। संघर्षशील जनता की आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी। लेकिन, दूसरी तरफ जनता को गर्व भी महसूस हुआ क्योंकि उनकी प्यारी नेत्री ने समरभूमि में वीरता व बलिदान का एक जबर्दस्त उदाहरण पेश किया। और वह उदाहरण न केवल पीएलजीए के योद्धाओं के लिए, बल्कि तमाम युवक–युवतियों के लिए प्रेरणादायक और अनुकरणीय है।

कॉमरेड रनिता की शहादत जहां क्रांतिकारी जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी है, वहीं उनके पराक्रम ने दुश्मन के दिल में स्थाई रूप से सिहरन पैदा कर दी है। क्या एक कम्युनिस्ट गुरिल्ला से लड़ने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित व अत्याधुनिक हथियारों से सिर से पांव तक लैस सैकड़ों कमांडो, माईनप्रूफ गाड़ियों और हेलिकॉप्टरों की मदद के बावजूद 8 घंटे का समय लगेगा? दुश्मन के सामने यह प्रश्न पहाड़ बनकर खड़ा हो गया है। सिर्फ एक गुरिल्ला ने, एक आदिवासी महिला छापामार ने, जिसके पास सिर्फ एक .303 की रायफल थी और जिसमें थे सिर्फ 33 कारतूस, करीब–करीब एक पूरी बटालियन की संख्या में बलों को जिस प्रकार दिन भर उलझाए रखा, वह अपने आप में बेमिसाल है। कॉमरेड रनिता को यह पता था कि पुलिस कमाण्डों का इतना भारी घेराव को तोड़ पाना लगभग नमुमकिन है। इसलिए उन्होंने तय कर लिया था कि उनको आखिरी दम तक लड़ना है, किसी भी हालत में दुश्मन के सामने घुटने नहीं टेकने हैं। पार्टी पर, जनता पर और माओवादी जनयुद्ध के सिद्धांत पर अटल विश्वास रखने वाली कॉमरेड रनिता अपने पास मौजूद रायफल का सही इस्तेमाल करते हुए, अचूक निशानेबाजी का उम्दा प्रदर्शन करते हुए एक–एक कर दुश्मनों को मार गिराती गई और घायल करती गई। अकेली होने पर भी, चारों तरफ सैकड़ों पुलिस व कमाण्डो बलों की मौजूदगी से भी, लगातार हजारों गोलियां और दर्जनों गोले दागने से भी वह नहीं घबराई, न ही उनके हौसले पस्त हुए। करीब 8 घण्टों तक अकेले दम पर प्रतिरोध को जारी रखते हुए दो कोबरा और एक सी–60 कमाण्डो को ढेर किया और चार अन्य को घायल कर दिया। आइए, इस निरुपम वीरांगना की आदर्शपूर्ण जिंदगी के अन्य पहलुओं पर नजर डालें।

एक आम आदिवासी महिला से अनुपम योद्धा के रूप में उभरने का सिलसिला

तकरीबन 35 साल की कॉमरेड रनिता का जन्म गढ़चिरोली जिले के एटापल्ली तहसील के पोटावी जेवेली गांव में आदिवासी हिचामी परिवार में हुआ था। यह भी कह सकते हैं कि पार्टी का गढ़चिरोली में प्रवेश के समय रनिता का भी जन्म हुआ और पार्टी के नेतृत्व में संघर्ष के विस्तार के साथ-साथ कॉमरेड रनिता भी बड़ी होती गयीं। 18 साल की होते ही वह पार्टी में भर्ती हो गयीं। उनका गांव गढ़चिरोली के क्रांतिकारी गांवों में से एक है। इस गांव ने अपने कई बेटों-बेटियों को पार्टी व क्रांति को समर्पित किया है। उनके परिवार के कई दूसरे सदस्य भी पार्टी और जन संगठनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मां सुइनी हिचामी और पिता दल्लू हिचामी की इस लाड़ली बेटी का नाम घर में रामको था। रामको के तीन भाई व एक छोटी बहन हैं। दल्लू हिचामी गरीबी के चलते अपनी बेटी को नहीं पढ़ा सके। रामको बचपन से ही अपनी मां के साथ झाड़ू बुहारना, पानी लाना, गोबर फेंकना, खाना बनाना आदि घरेलू कामों में हाथ बंटाया करती थीं। जैसे-जैसे वह बड़ी होती गयी तो घर का सारा काम उसके ऊपर ही आन पड़ा। वनोपज जमा करना हो या उसको बाजार में बेचने जाना हो, सब रामको ने अपने कंधों पर ले लिया। इतनी ही नहीं, घरेलू कामों को सुबह-सुबह ही खत्म कर अपने भाइयों के साथ खेत में हल चलाने भी जरूर जाती थीं। खेत में चाहे मेड़ बांधनी हो या निंदाई करनी हो या अन्य काम, सबमें रामको अपना हिस्सा बराबर अदा करती थीं।

रामको छोटे, बड़े सबकी चहेती हुआ करती थीं। छोटों से प्यार से और बड़ों से सम्मान के साथ बात करती थीं। मुस्कराहट हमेशा उनके चेहरे पर बनी रहती थी। इसलिए रामको का घर ही गांव के तमाम लड़के-लड़कियों का अड्डा बनता था। वहां जमा होकर वे घर-बाहर व पार्टी का कामकाज और दुश्मन के दमन आदि के बारे में चर्चाएं करते थे। खास बात यह थी कि उस गांव में लड़कियां ही मुख्य रूप से संगठन का नेतृत्व करती थीं।

लुटेरी सरकार द्वारा जारी सुधार कार्यक्रमों के सिलसिले में गांव में एक बार प्रौढ़ शिक्षा मिशन शुरू हुआ था। लोगों के नाम तो उसमें दर्ज किये गए थे लेकिन कभी भी स्लेट-पेंसिल, पुस्तकें आदि नहीं दी गयी थीं। पार्टी ने भी रात्रि-स्कूल चलाने का फैसला जब जन संगठनों के माध्यम से लागू किया तो कॉमरेड रामको ने उसमें बढ़-चढ़ कर भागीदारी की। गांव के लोगों, खासकर युवक-युवतियों ने पांच-पांच रुपये जमा करके स्लेट-पेंसिल, मिट्टी तेल व लालटेन आदि का इंतजाम कर लिया। दिन भर काम करने से सभी लोग थक जाते थे। कभी-कभी स्कूल नहीं आते थे। लेकिन कॉमरेड रामको कितनी भी थकी-हारी हो परंतु पांच महीने चली रात्रि-स्कूल में कभी गैर हाजिर नहीं हुईं, बल्कि अपनी सहेलियों को भी बराबर इसके महत्व को समझाते हुए उनको भी लेकर आती थीं। उन्हें जिद थी कि मुझे क्यों नहीं पढ़ाई-लिखाई आ सकती। इसी जिद ने उन्हें पांच महीनों में साक्षर बना दिया। पार्टी में भर्ती होने के बाद उस ज्ञान में और इजाफा हुआ।

दरअसल नई-नई चीजों को सीखना चाहे वह गाना हो, नाच हो या पार्टी का अन्य कामकाज - वह मन लगाकर सीखती थीं। जब तक उन्हें वह काम नहीं आ जाता था तब तक वह उसका पीछा नहीं छोड़ती थीं। उन्हें चैन नहीं मिलता था। आसपास के गांवों में जब भी शादियां व अन्य समारोह होते थे तो वह अपनी सहेलियों-दोस्तों के साथ भाग लेने जाती थीं। गाय-बकरी चराने के लिए जब सब जंगल जाते तब भी उनकी जुबां पर गाने ही घूमते रहते थे। इसी तरह उन्होंने पार्टी के गीतों व अन्य कामों को भी सीख लिया।

1988-1990 के दरमियान उस इलाके में जनसंगठनों का जबरदस्त विस्तार हुआ। जन संगठनों के कार्यकर्ता गांव-गांव में गीत-नाचों के जरिये सभाएं करने आते थे। 1991-92 के बीच उसके गांव के जनसंगठन नेताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया और यातनाएं दीं। तब तक कॉमरेड रामको भी जनसंगठन के कामों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी थीं। इसके चलते गांव के मुखियाओं का दबाव उसके मां-बाप पर आया। उन्हें रोकने की कोशिश की गयी। उन्हें डर दिखाया जाता था कि संगठन में जाने से जेल होगा। उस दौरान गुरिल्ला दस्ता का भी गांव में कम ही आना-जाना होता था।

1995–96 में दस्ते ने फिर से उनके गांव में जाना शुरू किया। फिर एक बार दंडकारण्य आदिवासी किसान–मजदूर संघ और क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की इकाइयों का गठन किया गया। तब कॉमरेड रामको केएएमएस की सदस्या बन गयीं। जब भी दस्ता गांव में पहुंचता था तो वह अपनी सहेलियों को लेकर दस्ता के लिए पानी, साग–सब्जी, चावल आदि जमा कर पहुंच जाती थीं। दस्ता सदस्यों से मिलकर नये–नये मुद्दों पर बात करती थीं।

पारंपरिक तरीके से जबरदस्ती की जाने वाली शादियों के खिलाफ बचपन से ही रामको ने बगावत का झंडा उठा लिया था। उन्होंने न केवल दूसरों के मामले में, बल्कि जब खुद की जबरदस्ती शादी की जाने लगी तो उसके खिलाफ डटकर लड़ा और अपने संघर्ष में सफलता अर्जित की। शादी के बाद महिलाओं के ब्लाउज (चोली) पहनने पर पारंपरिक रूप से आदिवासी रिवाज में पहले प्रतिबंध होता था, ऐसे गलत रिवाजों के खिलाफ किए गए संघर्ष में कॉमरेड रामको ने भी भागीदारी की। पारंपरिक मुखियाओं के खिलाफ लड़ने के लिए युवतियों को संगठित किया। यही वजह थी कि गांव के कबीलाई मुखिया रामको से बहुत चिढ़ते थे। लेकिन रामको हमेशा हिम्मत के साथ दस्ता के पास जाती थीं। गांव की और महिलाओं की समस्याओं से दस्ता को अवगत करवाती थीं। वह गांव में संगठन के खिलाफ मुखियाओं की साजिशों की पोल खोलती थीं।

गरीबी, शोषण, उत्पीड़न, महिलाओं के खिलाफ सामंती कबीलाई रीति–रिवाज आदि को कॉमरेड रामको अच्छी तरह समझ चुकी थीं। इसलिए वर्ग दुश्मनों और प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ कॉमरेड रामको दृढ़ता के साथ खड़ी हो गईं।

1997 में कॉमरेड रामको को केएएमएस की रेंज कमेटी में चुना गया था। महिलाओं की समस्याओं पर कॉमरेड रामको की समझ को देखते हुए केएएमएस की ओर से उन्हें आंध्रप्रदेश के हैदराबाद शहर में 1997 में प्रस्तावित एक महिला सेमिनार में भेजने का फैसला किया गया था। हालांकि कॉमरेड रामको को हिंदी या अन्य भाषाएं नहीं आती थीं, फिर भी वह उसके लिए तैयार हुई थीं। 1997 में 'नक्सलबाड़ी के 30 साल' के अवसर पर

कोलकाता में एक व्यापक आमसभा हुई थी। कॉमरेड रामको उसमें जाने के लिए भी सहर्ष तैयार हो गयीं। उस समय तेंदुपत्ता तोड़ाई का काम चल रहा था। उन्होंने अपने कई साथियों को भी कोलकाता जाने के लिए तैयार किया। कोलकाता मीटिंग से वापस आते समय रेल चढ़ने के दौरान गिर जाने से वह बुरी तरह घायल भी हुई थीं। और आते-आते पुलिस ने उनके भाई को गिरफ्तार किया था। फिर भी उन्होंने हिम्मत से काम लिया। एक आदिवासी महिला होने के नाते छोटे शहरों तक को न देखने वाली अपनी पृष्ठभूमि के बावजूद अनजान भाषा बोलने वाले और दूर-दूर में मौजूद बड़े शहरों में जाने का साहस दिखाना इस बात को दर्शाता है कि कॉमरेड रनिता के अंदर नई-नई चीजों को जानने व समझने की कितना लालसा हुआ करती थी।

कॉमरेड रामको ने अपने गांव में संगठन को मजबूत करने की पूरी कोशिश की। वह न केवल अपने गांव में, बल्कि आासपास के दूसरे गांवों में भी महिलाओं की मीटिंगों में भाग लेने जाती थीं। इस तरह वह उस इलाके में सभी की चहेती बन गईं। उन्होंने संगठन के कामकाज को संभालते हुए ही घर पर हर प्रकार का काम किया। हल चलाना, बांस से टोकरी बनाना, खपचियां निकालना, बाड़ बनाना आदि कामों में वह हाथ बंटाती थीं। उनकी एक खास खूबी यह थी कि जो कुछ वह सीख जाती थीं अपने साथ वालों को भी सिखाने के लिए हमेशा तत्पर रहती थीं।

1999 में कॉमरेड रामको कसनसूर एरिया के गुरिल्ला दस्ता में भर्ती हो गयीं। वहीं से कॉमरेड रामको का नाम 'रनिता' के रूप में बदल गया जो जनयुद्ध के इतिहास के पन्नों में स्थाई रूप से अंकित हो गया। पार्टी में खुद को विकसित करने के पहलू को ही हमेशा अहमियत देने वाली कॉमरेड रनिता ने आंदोलन में राजनीतिक तौर पर दृढ़ता से खड़े होने के बाद एक साथी कॉमरेड को पसंद कर पार्टी के तौर-तरीकों में उनसे शादी कर ली।

क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की मजबूत संगठनकर्ता

गुरिल्ला दस्ते में भर्ती होने के बाद 1999 में ही कॉमरेड रनिता का तबादला टिप्रागढ़ एरिया में किया गया था। कॉमरेड रनिता ने इस प्रस्ताव को बिना किसी झिझक के स्वीकार किया। उस समय टिप्रागढ़ एरिया की जनता

दुश्मन के दमनचक्र का प्रतिरोध करते हुए फिर से अपने आपको संगठित करने लगी थी। वह जिस भी गांव में जातीं महिलाओं को, खासकर युवतियों को केएएमएस में संगठित करने का प्रयास करती थीं। रेंज व एरिया स्तर पर केएएमएस अधिवेशनों का आयोजन कर उन्होंने केएएमएस को मजबूत करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। कोसमी गांव की शहीद कॉमरेड मैनाबाई नैताम के साथ मिलकर उन्होंने कोसमी गांव में तीखा संघर्ष चलाकर जन विरोधी व महिला विरोधी तत्वों के वर्चस्व को समाप्त कर कोसमी गांव को केएएमएस के मजबूत गढ़ में बदल दिया।

2003 में ग्यारापत्ति में आयोजित 3 हजार लोगों का मोर्चा (जुलूस) और मानपुर में आयोजित 10 हजार लोगों का मोर्चा जिसमें महिलाओं की भारी संख्या में शामिल थीं, के पीछे कॉमरेड रनिता के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वह एक मजबूत व सुलझी हुई संगठनकर्ता थीं। अपनी बात को मनवाने के लिए वह हमेशा समझाने-बुझाने का तरीका अपनाती थीं। तीखे दमन के दिनों में गांव की अगर चार महिलाएं भी मीटिंग में आती हैं तो वह उनसे बात करके उन्हें संगठन में सक्रिय रूप से काम करने के लिए प्रेरित करती थीं। अगर महिलाओं को संगठन का काम करने में परेशानी हो रही हो, वह उनसे बात करके उनकी समस्याओं को हल करने की कोशिश करती थीं। कॉमरेड रनिता कभी खाली नहीं बैठती थीं, हमेशा काम में लगी रहती थीं। छोटी-मोटी बीमारियों की वह कभी परवाह नहीं करती थीं। ऐसी आदर्श कॉमरेड थीं रनिता।

एक आदर्श कम्युनिस्ट

फरवरी 1999 में भर्ती होने वाली कॉमरेड रनिता को 2003 में पार्टी ने एरिया कमेटी सदस्यता प्रदान की। उनकी राजनीतिक व सांगठनिक योग्यताओं और पार्टी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को देखते हुए उन्हें यह पदोन्नति दी गई। भर्ती होने से पहले कॉमरेड रनिता थोड़ा-बहुत पढ़ना-लिखना जानती थीं। लेकिन बाद में उन्होंने पूरी लगन के साथ पार्टी के साहित्य को पढ़ते हुए अपनी राजनीतिक चेतना बढ़ा ली। कॉमरेड रनिता ने कभी भी, किसी भी काम को ग्रहण करते हुए यह नहीं कहा कि यह नहीं हो सकता। पार्टी द्वारा दी

गयी हर जिम्मेदारी को वह सिर–माथे पर लेती थीं। 2004 में उनको दल की उप कमांडर का कार्यभार सौंपा गया। अपनी मेहनत व लगन से वह जल्द ही एक कमांडर के स्तर पर पहुंच गयीं। बाद में उनको उस दस्ते की कमांडर के रूप में नियुक्त किया गया।

समय–समय पर पार्टी द्वारा चलाए गए भूल सुधार अभियानों में कॉमरेड रनिता ने एक परिपक्व कम्युनिस्ट के तौर पर भाग लिया। उन्होंने हमेशा कॉमरेडों की आलोचनाओं को विनम्रता के साथ माना और अपनी आत्मालोचना पेश की। हमेशा अपनी गलतियों से सबक लेकर आगे बढ़ना उनका एक खास गुण था। पार्टी के अन्य सदस्यों के अंदर मौजूद गैर–सर्वहारा रुझानों और पितृसत्तात्मक विचारधारा के खिलाफ उन्होंने वैचारिक संघर्ष चलाया। खासकर 2010–11 में जब गढ़चिरोली डिवीजन में गैर–सर्वहारा रुझानों के खिलाफ एक विशेष भूल–सुधार अभियान लिया गया था, उसमें कॉमरेड रनिता ने एक आदर्श कम्युनिस्ट के रूप में आलोचनाएं पेश कीं। 'मरीज को बचाने के लक्ष्य से रोग से लड़ने' की माओवादी पद्धति का पालन करते हुए उन्होंने उक्त अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जन संस्कृति की प्रचारक

डिवीजन में सांस्कृतिक कर्मी के रूप में भी कॉमरेड रनिता का योगदान महत्वपूर्ण रहा। उनकी मौजूदगी में सीएनएम का कोई कार्यक्रम हो और वह गीत–नृत्य में भाग न लें ऐसा हो ही नहीं सकता था। जनवरी 2003 में उनके द्वारा किया गया नाटक 'महुआ के पानी' जो शराब पीने के खिलाफ था तथा दूसरा नाटक पार्टी की गरिमा के ऊपर 'आक्यु की अमर कहानी' में उनका परिपक्व अभिनय सदा एक यादगार रूप में हमारे सामने रहेगा। उनकी स्मृति–सभा में बोलते हुए चेतना नाट्य मंच की एक महिला कलाकार ने कहा: ''क्रांतिकारी जनतना सरकार अध्यक्ष होते हुए भी वह हमेशा हमारे साथ नाच–गानों में शामिल होती थी। जब कोई नया गाना लिखना होता था तो वह साथ होती थी। वह हम सभी के लिए आदर्श थी। जब वह गांव में जाती थी तो युवक–युवतियां रनिता के स्वर में गाने सुनने के लिए जमा हो जाते थे। उनको आशा रहती थी कि रनिता है तो कुछ गाने भी सुनाएगी।''

सभी की चहेती

कॉमरेड रनिता का जहां बड़े-बूढ़े सम्मान करते थे वहीं उनकी उम्र के नौजवानों के लिए वह प्रेरणा का स्रोत थीं। छोटों के लिए बड़ी दीदी थीं। कॉमरेड रनिता जब भी गांव में जाती सभी उन्हें घेरे रहते थे। और बड़े प्यार से उनको देखते थे। उनके साथ अपने मन की बातों को खोलते थे। आज टिप्रागढ़, चातगांव व कसनसूर एरिया में ऐसे दर्जनों कॉमरेड यह कहते हुए मिल जाएंगे कि वे रनिता से प्रेरणा पाकर पार्टी में भर्ती हुए हैं। या फिर कॉमरेड रनिता के साथ बिताये किसी प्रेरक प्रसंग को बताते हुए मिल जाएंगे। जब दस्ता लंबी यात्रा के बाद थक जाता था और सभी आराम करने लगते थे तब कॉमरेड रनिता अपनी ताकत को समेटकर सबके लिए चाय बनाती थीं या रसोई का काम करने लग जाती थीं। तमाम सदस्य उन्हें बेहद प्यार करते थे।

निरुपम जन योद्धा

अपने गांव में रहते समय ही कॉमरेड रनिता ग्राम सुरक्षा दल की सक्रिय सदस्या बनी थीं। उन्होंने कई बार दुश्मन के कैंप पर की गई फायरिंग में भाग लिया। जनविरोधियों तथा पुलिस मुखबिरों को सजा देने में वह कभी पीछे नहीं हटती थीं। एक बार प्लाटून उनके गांव के पास सड़क पार कर रहा था तब अचानक पुलिस से उसकी मुठभेड़ हो गयी। कुछ देर तक फायरिंग चलती रही। उसके बाद सुरक्षित पीछे हटकर प्लाटून उनके गांव जेवली में रुका तब उन्होंने कॉमरेडों से सुना कि उनका कुछ-कुछ सामान घटनास्थल पर छूट गया था। कॉमरेड रनिता ने दूसरे दिन सबेरे ही फायरिंग स्थल पर जाकर छूटे हुए सामानों को उठा लाकर प्लाटून के हाथों सौंप दिया।

14 नवंबर 2008 को कुरेनार में दुश्मन के आने की खबर जब उन्हें मिली थी तब उनकी तबियत खराब थी और पैरों में चप्पल तक नहीं थे। फिर भी उन्होंने अपने दस्ते के साथ डेढ़ घंटे तक दौड़ते हुए जाकर दुश्मन पर हमला किया था, जिसमें सीआरपीएफ के दो भाड़े के सैनिक मारे गए थे और एक घायल हुआ था। आखिरी बार हुई माकड़चुवा की मुठभेड़ जिसमें कॉमरेड रनिता ने वीरगति को प्राप्त किया, में उनकी बहादुरी की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम होगी।

क्रांतिकारी जनतना सरकार की सक्षम अध्यक्ष

2008 के अगस्त महीने में जब चातगांव एरिया जनातना सरकार का गठन किया जा रहा था तब प्रतिनिधि सभा ने सर्वसम्मति से उन्हें चातगांव एरिया क्रांतिकारी जनतना सरकार का अध्यक्ष चुन लिया। कॉमरेड रनिता को गढ़चिरोली जिले में एरिया क्रांतिकारी जनाताना सरकार की प्रथम महिला अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त हुआ जिसकी वह हकदार भी थीं। सरकार चलाने का अनुभव न होने के कारण कॉमरेड रनिता ने अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए कड़ा परिश्रम किया और अनुभाव प्राप्त किया। पार्टी, पीएलजीए व जन संगठनों के कामकाज को समन्वय करते हुए जिस कुशलता से कॉमरेड रनिता ने क्रांतिकारी जनतना सरकार का संचालन किया वह अन्य साथियों के लिए अनुकरणीय बन गया है। प्रतिकूल परिस्थितियां होते हुए भी, शोषक सरकार के फर्जी सुधार कार्यक्रमों का पर्दाफाश करते हुए चातगांव एरिया में क्रांतिकारी विकास कार्यक्राम की शुरूआत कर कॉमरेड रनिता ने लुटेरी सरकार को करारा जवाब दिया। जनता को केन्द्र में रखते हुए अपनाए गए जन विकास कार्यक्रमों के जरिए एक विकल्प प्रस्तुत करने में कॉमरेड रनिता का योगदान शानदार रहा।

कॉमरेड रनिता आज हमारे बीच नहीं हैं। उनकी शहादत से पार्टी को जो नुकसान हुआ है उसकी भरपाई आसान नहीं होगी। लेकिन हजारों वीर योद्धाओं द्वारा स्थापित शहादत की महान परम्परा को कॉमरेड रनिता ने जिस प्रकार आगे बढ़ाया है उससे उनकी मृत्यु हिमालय से भी ऊंची हो गई है। उन्होंने वीरता व बहादुरी की जो मिसाल पेश की है वह आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गयी है। आज कॉमरेड रनिता का मतलब बन गया है - सच्ची कम्युनिस्ट, जनता की ईमानदार सेवक, एक आदर्श जन नेता, एक ऐसी वीरांगना जो अकेली होते हुए भी आधुनिक हथियारों से लैस सैकड़ों दुश्मनों को धूल चटा देगी। आइए, इस वीरांगना की प्रेरणादायक शहादत को अपना सिर झुकाकर सलाम करें।

गढ़चिरोली जिले में हमारी पार्टी का पूरी तरह खात्मा करने की नीयत से दुश्मन भीषण दमन अभियान छेड़े हुए है। जनता में भय व्याप्त करने के लिए आधुनिक हथियारों से लैस होकर भारी संख्या में गश्त पर निकल रहे हैं और हमले कर रहे हैं। क्रांतिकारी जन संगठनों के कार्यकर्ताओं को पकड़ कर जेलों

में डाल रहे हैं; जनता की पिटाई कर रहे हैं; महिलाओं से बलात्कार कर रहे हैं। प्रतिक्रियावादी एलआईसी की रणनीति के तहत झूठे सुधार कार्यक्रमों की बाढ़ लाए हुए हैं। दुश्मन के चौतरफा हमले का जवाब देने के लिए पीएलजीए योद्धा, पार्टी सदस्य, जनसंगठनों के सदस्य और क्रांतिकारी जनतना सरकार के कार्यकर्ता अपने-अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभा रहे हैं। कॉमरेड रनिता की शहादत को इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। पिछले 30 सालों में दण्डकारण्य के संघर्ष में तथा गढ़चिरोली क्षेत्र में सैकड़ों वीरों ने अपने प्राणों को न्यौछावर किया। शहीदों के खून से सुर्ख हुए बलिदानी रास्ते पर चलते हुए ही कॉमरेड रनिता ने एक प्रेरणादायक नमूना पेश किया।

एक कमजोर सेना भी, अगर उसे जनता का समर्थन प्राप्त हो और उसकी जड़ें जनता के अंदर गहराई से जमी हुई हों, तो वह अपने से कई गुना ताकतवर सेना को हरा सकती है। प्रतिक्रियावादी वर्ग और उनकी रक्षा में लगे विभिन्न भाड़े के सशस्त्र बल ऊपर से देखने पर भले ही भारी और शक्तिशाली दिखते हों, पर वे सब वास्तव में कागजी बाघ होते हैं। इसीलिए कोबरा, सी-60 या ग्रेहाउण्ड्स, जनयुद्ध इन सबका सफाया कर देगा। यह एक ऐतिहासिक नियम है जिसे बदलना सोनिया, मनमोहन, चिदम्बरम, आर.आर. पाटील जैसों के लिए नमुमकिन है। जनता ही इतिहास का निर्माता है। जनता ही वीरों को जन्म देती है। चूंकि जनयुद्ध जनता के हित में लड़ा जाने वाला युद्ध है, इसलिए वह कई साहसिक योद्धाओं को पैदा करता है। कॉमरेड रनिता भी उन्हीं में से एक थीं। माओवादी जनयुद्ध अपराजेय है। 'रामको' से 'रनिता' में परिवर्तन को इन्हीं सार्वभौमिक सच्चाइयों के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। जनता और जनयुद्ध ने ही एक आम आदिवासी युवती को एक वीरांगना के रूप में उभारा है। रनिता अब एक व्यक्ति का नाम नहीं रहा, वह आज बलिदान और बहादुरी का पर्याय बन गया है। आइए, कॉमरेड रनिता के उच्च आदर्शों को आत्मसात करते हुए उनके अधूरे मकसद को पूरा करने की कसम खाएं।

गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी

भाकपा (माओवादी)

दण्डकारण्य

"चिदंबरम के दौरे के बाद दमन और झूठे सुधार दोनों ही बढ़े हैं"

(यह साक्षात्कार 'जनताना राज' के मई-अगस्त 2010 अंक में छपा था। उसका यह हिंदी रूपांतरण है।)

ज.रा. : दंडकारण्य जनयुद्ध के तीस साल के अवसर पर आपको लाल सलाम।

रनिता : आपको भी लाल-लाल सलाम! धन्यवाद।

ज.रा. : एरिया अध्यक्ष के रूप में आपके अनुभव के बारे में हम जानना चाहेंगे। आपकी सरकार में महिलाओं की संख्या कितनी है?

रनिता : कामकाज अच्छा ही चल रहा है। मुझे अध्यक्ष बनाने पर जनता का धन्यवाद करते हुए मैं अभिवादन करती हूं। हमारी क्रांतिकारी जनतना सरकार कमेटी में मेरे साथ एक और महिला है। अलग-अलग विभागों में भी दो महिलाएं काम कर रही हैं। कुल 50-55 संख्या में हम चार ही महिलाएं हैं।

ज.रा. : इतनी कम संख्या क्यों है कॉमरेड? 8 प्रतिशत से शायद बहुत कम?

रनिता : (मुस्कुराते हुए) हां, कम ही है। सरकारी हिंसा और पितृसत्ता महिलाओं को आगे नहीं आने दे रहीं। हमारी सरकार की नीति के हिसाब से तो 50 प्रतिशत महिला प्रतिनिधि होने का अधिकार है। लेकिन हम इसको भर नहीं पाए। महिलाओं को प्रोत्साहित करने में, पारंपरिक मुखियाओं का विरोध करते हुए, महिलाओं को हिम्मत देते हुए दृढ़तापूर्वक कोशिश करने में हमारी भी कमजोरी है। अगले

चुनावों में कम से कम 8–10 महिलाओं को सरकार में चुनने का हमने लक्ष्य रखा है।

ज.रा. : दंडकारण्य जनयुद्ध के तीस साल का उत्सव कैसे मनाया?

रनिता : अच्छी तरह से मनाया। हमें एक नया अनुभव प्राप्त हुआ। लुटेरी सरकार के फर्जी सुधार कार्यक्रमों के खिलाफ जनता की सामूहिक क्षमता को प्रदर्शित करने में भूमि समतलीकरण अभियान ने बहुत अच्छा अवसर प्रदान किया है।

ज.रा. : थोड़ा विस्तार से बताइए।

रनिता : हां, हमारी जोन सरकार की तैयारी कमेटी की तरफ से अक्टूबर 2010 में ही प्रस्ताव आया था। उस प्रस्ताव पर हमने सबसे पहले हमारी एरिया क्रांतिकारी जनतना सरकार की मीटिंग में चर्चा की। पूरी कमेटी ने खुशी के साथ उसका अनुमोदन किया। उसके बाद फरवरी महीने में तीन दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया। 45 प्रतिनिधि उसमें शामिल हुए जिसमें तीन महिलाएं थीं। कार्यशाला में 'भूमि समतलीकरण अभियान' पर चर्चा कर लक्ष्य निधार्रित किए थे। हमारे प्रतिधिनिधियों ने निर्णय लिया की यहां भूमि समतलीकरण की बजाये हमें मेड़ व बांध बनाने चाहिए, क्योंकि हमारे इलाके में पहले से ही भूमि समतल है। इस अभियान में सबसे पहले गरीब किसानों, फिर पीएलजीए सैनिकों के परिवारों और बाद में जनतना सरकार की सामूहिक भूमि पर कार्य करने का निर्णय हमारे प्रतिनिधियों ने लिया।

ज.रा. : इस अभियान में कितनी जनता शामिल हुई, काम कितना हुआ?

रनिता : जनता सैकड़ों की संख्या में शामिल हुई। हमारे इलाके में लगभग 1100 जनता कामकाज में शामिल हुई। महिलाओं की संख्या लगभग 500 थी। गांव–गांव में काम चला, जिससे 35 गरीब किसान परिवारों को और 50 जन सैनिकों के परिवारों को मदद मिली। इस काम में जनता के साथ–साथ पीएलजीए योद्धाओं ने भी भाग लिया। 6 गांवों की सामूहिक भूमि पर काम किया गया। एक प्रकार से महीने भर जनता ने हंसी–खुशी के साथ इस अभियान को सफल बनाया। जनता और गुरिल्लों ने मिलकर बांध बांधना, तलाब बनाना आदि काम जोश के साथ पूरा किया। जनता अपने ही घरों में खाना खाकर, घर से खाना ले आकर काम करती थी।

ज.रा. : घर से ही क्यों? गढ़चिरोली आदिवासी जनता की परंपरा में 'आरो गाटो' का रिवाज है न? जोन क्रांतिकारी जनतना सरकार की तैयारी कमेटी ने भी प्रस्ताव पारित किया था कि क्रांतिकारी जनतना सरकार की तरफ से काम के दिनों में खाना देना चाहिए। लेकिन आपके इलाके में इस प्रस्ताव को लागू न कर पाने का कारण क्या है?

रनिता : हां, आपकी बात सही है। हमारे रिवाज में आरोगाटो देने की रीत है। जोन क्रांतिकारी जनतना सरकार की तैयारी कमेटी का भी यही प्रस्ताव था। हमने सोचा था कि अगर जनता ही ऐसा कर रही है तो सरकार की तरफ से देने की क्या जरूरत है। घर से खाकर आने से भी कोई समस्या नहीं आई।

जा.रा. : 30 साल के मौके पर आमसभा, कॉमरेड आजाद की याद में शहीद स्मारक का निर्माण आदि के बारे में हमें बताइए।

रनिता : हां, सब कुछ हुआ। हमारे एरिया के गांव-गांव में पहले भूमकाल सभाएं की गयीं। उसके बाद 9 स्थानों पर बड़ी-बड़ी आमसभाओं का आयोजन किया गया। इनमें कुल मिलाकर 3500 जनता शामिल हुई। जन मिलिशिया चारों तरफ संतरी पर तैनात रही। चेतना नाट्य मंच के कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम दिये। जनता गांव-गांव से ढोल-डफलियां लेकर शामिल हुई। सभाएं खत्म होने के बाद रात भर जनता नाचती-गाती रही। कॉमरेड आजाद की याद में 200 के करीब लोगों ने रातोंरात शहीद स्मारक का निर्माण किया। रोड के किनारे स्मारक का निर्माण किया गया था। लेकिन भारी संख्या में आकर पुलिस ने उसको तोड़ डाला।

ज.रा. : दिसंबर 2010 में केंद्रीय गृहमंत्री पी. चिदंबरम गढ़चिरोली की यात्रा पर आया था। अब क्या परिस्थिति है?

रनिता : चिदंबरम की यात्रा के बाद दमन बहुत बढ़ा है। फर्जी सुधार कार्यों में भी बढ़ोतरी हुई है। हमारी क्रांतिकारी जनतना सरकार पांच पुलिस थानों के बीच में काम कर रही है। कोबरा कमांडो और सी-60 वालों की गश्त में भी इजाफा हुआ है। गांव-गांव में तंटा मुक्ति समितियों का भी गठन किया गया है। पुलिस वाले गांवों में आकर गैर-आदिवासियों व जन विरोधी आदिवासी मुखियाओं के साथ इन समितियों का गठन कर रहे हैं। इनमें हमारे पीएलजीए सदस्यों के परिवारों, पार्टी से जुड़े

कॉमरेडों को भी जबरन शामिल होने के लिए दबाव डाला जा रहा है। तंटा मुक्ति समितियों में से लंपट लोगों को चुन-चुन कर पुलिस वाले ट्रेनिंग भी दे रहे हैं। भामरागढ़ में सलवा जुडूम के बदनाम गुंडे नेताओं ने दो दिन डेरा डालकर सभाएं कीं और जनता में दहशत पैदा कर दी। तंटा मुक्ति समिति और सलवा जुडूम करीब-करीब एक ही चीज है।

फर्जी सुधारों में... घरों का निर्माण, रोड बनाना, चेक डेम बनाना, कर्जा देना आदि का प्रचार चल रहा है। टिप्रागढ़ एरिया में यह प्रचार किया जा रहा है कि 50 से कम घरों वाले गांवों को हटाकर सड़कों के किनारे बसाया जाएगा। गांव-गांव में वन सरंक्षण समितियों का गठन किया गया है। पांच-पांच हजार रुपये के बर्तन, कुर्सी, अलमारी आदि दिए जा रहे हैं। उसके अलावा पंचायत के स्तर पर 11-11 सदस्यों को लेकर वन हक समितियां भी बनाई जा रही हैं। इन कमेटियों को जमीन का पट्टा देने का काम सौंपा गया है। इस तरह से सुधारों की बाढ़ सी चली हुई है। एक हाथ में बंदूक - एक हाथ में सुधार काम को लेकर दुश्मन आगे आ रहा है।

ज.रा. : और क्या-क्या है? अभी यह क्यों बढ़ गए हैं?

रनिता : अभी महिला स्वयं सहायता ग्रुप भी बनने शुरू हो गए हैं। इनको स्थानीय रूप से अल्प बचत गट के नाम से बुलाया जा रहा है। एक-एक ग्रुप में 11-11 महिलाएं होती हैं। वे 20 रुपये प्रति महीना बैंकों में जमा करती हैं। उसके बाद वहां से कर्ज लेती हैं। कर्ज के पैसे से छोटी-मोटी चाय की दुकान, किराना दुकान आदि खोलने की बात करते हैं। यह सब महज ढोंग है और महिलाओं कर्ज के चक्रव्यूह में फंसाकर बड़े पूंजीपतियों को फायदा पहुंचाने की चाल है। इसी तरह कृषि के हिसाब से भी एक योजना चल रही है। ग्रीनहंट आपरेशन शुरू होने के बाद साल-दर-साल ऐसे सुधार कार्यक्रम बढ़ रहे है जिसका असल मकसद है क्रांतिकारी आंदोलन के रास्ते से जनता को अलग करना। चिदंबरम की यात्रा के बाद इनमें काफी इजाफा हुआ है। इसका प्रतिरोध करने में हमें और ज्यादा सक्रियता दिखानी होगी।

ज.रा. : क्रांतिकारी जनतना सरकार की तरफ से क्रांतिकारी सुधार कार्यक्रमों

को लागू करने में आपको किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है?

रनिता : दुश्मन के साथ आर्थिक रूप से हम प्रतियोगिता नहीं कर सकते। हां, राजनीतिक चेतना बढ़ाकर जरूर उसे मात दे सकते हैं। भूमि समतलीकरण अभियान जैसे अभियानों की और ज्यादा जरूरत है। लुटेरी सरकार पैसों से नहीं, बल्कि जनशक्ति, लड़ाकूपन, क्रांतिकारी इच्छा शक्ति के बल पर पर सब कुछ संभव है। यह अभियान इस संदेश को जनता में अच्छी तरह से ले जाने में कामयाब हुआ है। इसी राह पर हम दमन का प्रतिरोध करते हुए क्रांतिकारी सुधार कार्यक्रमों को लागू करेंगे। इन दो सालों में कृषि विकास के लिए दस तालाब बनाए गए हैं। इस साल 20 क्विंटल धान और एक क्विंटल मंडिया की फसल हुई। कुछ जगहों पर सब्जियां भी लगाई गयी हैं। यह काम धीमी गति से चल रहा है।

जब हमारा प्रतिरोध तीव्र था तब सरकार के मेळाव (सरकारी मशीनरी का दिखावटी जमावड़ा) बंद हो गए थे। नहीं तो हर साल कम से कम 60-65 मेळाव जिला भर में होते थे। यह अभी तक बंद थे। लेकिन अभी फिर शुरू हो गए हैं। पेंडरी में दो और फूलबोडि में एक मेळाव हो चुका है। मुगनेर में मेळाव करने के लिए आए थे। लेकिन जनता ने प्रतिरोध कर उनको भगा दिया। अगर हम रास्ता नहीं देंगे तो वह नहीं आ सकते।

ज.रा. : 'जनताना राज' पत्रिका क्या आप नियमित रूप से पढ़ती हों, कैसी है?

रनिता : हमेशा पढ़ती हूं। अलग-अलग सरकारों के अनुभवों को जानने में मदद मिल रही है। वित्त विभाग के अध्यक्ष बलदेव का इंटरव्यु अच्छा था। स्कूल अध्यापक का इंटरव्यू भी उपयोगी लगा। सम-सामयिक राजनीतिक परिस्थितियां समझ में आ रही हैं। पत्रिका बहुत उपयोगी है।

ज.रा. : धन्यवाद कॉमरेड, समय देकर हमसे बात की। चिदंबरम का दौरा और आपके एरिया के बारे में अच्छी जानकारी दी।

रनिता : धन्यवाद, लाल सलाम!

कॉमरेड रनिता ना पाटा

पेसना पोड़दू संगे - रनिता दीदी
जनतना सरकार झंडा नीकुन केया मंता-2
एरिया जनतना सरकार ता अध्यक्ष मंजी चला कितीन - रनिता दीदी-2
सबे जनता ना तिप्पल उडसि करू-इरवु पुनवा लेवा - रनिता दीदी,
जनताना सेवा कीत्तिन - रनिता दीदी-2
पिसवल बदली कियाला रनिता दीदी खेती विकास लका उरसना निमा वेहितीन
काम कियाना सुर्ता माकिन वाया मंता - रनिता दीदी-2
अलग-अलग मत्ता जनता तुन पाटा पीटो वेहसोरे जमा कीसोरे
समझा कीसोरे समिष्टी काम ते शामिल कीत्तिन - रनिता दीदी-2
जबरदस्ती मर्मी कियना सियान लोरा रिवाज तुन - रनिता दीदी
पंच कमटी तासी निम्मा फैसला कीत्तिन -2
सामाज लोपा दीदीस्कुनु हक-अधिकार मंदना इत्तेके - रनिता दीदी
लड़ाई कियवा मुक्ति हिल्ले इंजी निम्मा वेहितीना -2
माओ वेहता पोल्लो करिसी एर ते मंदना कीके लेक्के रनिता दीदी
जनता लोप्पो कलिसि मंजी बुद्धि वेहतिना -2
ग्रीनहंट कोबरा नइकु घेराव कीयना हूडसी मीटु फायरिंग कीत्तिरा
भूमि उंगना आत्ता लेक्का लड़ाई कीत्तिरा - 2
जीवा तुन परवा कियवा आठ घंटा लडेमासि रनिता दीदी
मुवुर जन कुन हौक्सी मंजी निम्मा शहीद आत्तिना - 2
चार जन पोलिस तोरिन घायल कीसि आर-पार लडाई इंजी हर्रि तोहतीना
डोंगा सरकार तुनु हिले कित्तीना - 2
नारू टोला ते रनिता दीदी जनतना सरकार झंडा तेहची सुर्ता कींतोम
नीवा आशय मुन्ने ओयला किरिया कीत्तोमो -2
मुन्ने वायना पिल्लुड किनु आदर्श आसि तोहितीन - रनिता दीदी
भूमकाल जनता ना जोहार एता रनिता दीदी -2

‘हार्डकोर महिला नक्सली’

- माडिवी इडिमे

वर्ग समाज की थी अबला नारी
वर्ग संघर्ष में बनी राजनीतिक नेत्री प्यारी
दुश्मन ने बनाया दांवपेंच
धोखा देकर मारना उसको
रणभूमि में जन्मी रनिता
दुश्मन के दांवपेंच को हराकर
भूमकाल वीरांगना रमोतीन को याद करते हुए
उसी के रास्ते पर चलते हुए
सैकड़ों कोबरा कमांडों को
चातगांव की समरभूमि में शेरनी बनकर
दुश्मन को दिन भर कदम आगे बढ़ाने नहीं दी
8 घंटे की आर-पार लड़ाई
एक-एक गोली से एक-एक कमांडो को मिट्टी में मिलाते हुए
दुश्मन को चुनौती देते हुए
रणभूमि में वीरांगना की तरह लहू बहायी
‘युद्ध बिन जिंदगी नहीं’ कहते हुए
जान दी जनता के लिए
जनयुद्ध की महिला अबला नहीं
जन मुक्ति के लिए जी-जान लगाते हुए
बहादुरी का इतिहास लिख आदर्श बन गयी
वर्ग संघर्ष में जनफौजियों की हिम्मत बन गयी
युद्ध की राह में लाल परचम को लाल करते हुए
दुश्मन के सपनों में ‘हार्डकोर महिला नक्सली’
संग्रामी जनता के दिलों में
भोर का तारा बन गयी रामको!

रण में रमा गई रनिता

- निशांत

सैकड़ों नाग खूंखार काले निराले
पी-पीकर विष के प्याले
घात लगाए बैठे अपना फन निकाले

सैकड़ों कुकर्मी सी-60 कमांडो वाले
बुरी नीयत - बुरे इरादे काले मन में पाले
बैठे माकड़चुवा गांव पर घेरा डाले

सुबह हुई, सूरज निकला, सुर्ख लाली छाई
पंछी उठे - उठे गुरिल्ला ले-ले अंगड़ाई
गुरिल्ला रुके जंगल में चार
तीन चले गांव की ओर

था इरादा, दुख-दर्द बांटना जनता का
बच्चे-बूढ़े होंगे बीमार इलाज करना जनता का
फसल-बुआरा हुआ या नहीं - क्या हाल है जनता का

दूर से ही आहट पा लिये खूंखर नाग काले
तैयार हो गए कुत्ते काले - अपने दांत निकाले
जैसे घुसे गुरिल्ले गांव में वैसे ही घेरा डाले

इधर से गोली तड़-तड़-तड़
उधर से गोली तड़-तड़-तड़
सामने गोली तड़-तड़-तड़
पीछे से गोली तड़-तड़-तड़
सैकड़ों राइफलें, सैकड़ों तनी संगीन

उन सबके बीच में फंसे बहादुर गुरिल्ले तीन

माकड़चुवा में मच गया घमासान
गोली–बम बरसे बारिश समान
दो को मिला निकलने का मौका
एक बच गई सरे मैदान–सरे मैदान
मकई के खेत ने दिया आसरा
फिर वही बना जंग–ए–मैदान

एक तरफ
600 – कोबरा, कमांडो, पुलिस बल
1200 दानवी हाथ – मसल दें चींटी की तरह
1200 लौह बूट – कुचल दें हाथी की तरह
600 राईफलें – हजारों गोली – सैकड़ों ग्रेनेड
धरती मां की कमर तोड़ती माईन प्रूफ गाड़ियां
गगन में उड़ते लोहे के परिंदे
एक तरफ
कॉमरेड रनिता,
एक .303 राइफल और केवल 33 कारतूस

सोचो अगर उस की जगह हो आप
क्या करोगे
– आत्मसमर्पण?
– पीठ दिखाना?
– रहम की भीख मांगना?
– या आत्महत्या?
नहीं – नहीं – बिल्कुल नहीं
उसने ऐसा नहीं किया
इन सबको खारिज कर गयी – रनिता

अपनी ही एक रीत गढ़ गयी - रनिता
पीठ दिखाने वालों के मुंह पर
करारा तमाचा जड़ गयी - रनिता
हर गुरिल्ला को अनुसरणीय राह दिखा गयी - रनिता

उसके साथ था
जन के लिए प्राण न्यौछावर कर देने का
उच्च आदर्श - कम्युनिस्ट भावना,
कभी न झुकने का साहस।

उसने चुना बहादुरी का रास्ता
जंग-ए-मैदान में
खून के आखिरी कतरे तक से माटी को सींचने का रास्ता

दरिंदगी से निकले दांतों को
घमंड से उठे फनों को
गुरिल्ला हिम्मत से कुचल गयी - रनिता
सैकड़ों किराये के टट्टुओं पर भारी पड़ी - रनिता
एक अकेली ने 8 घंटे तक चलाया घमासान
अचूक निशानेबाजी से किया कमांडों का काम तमाम
आने वाली फौज के लिए
एक चेतावनी है महान - रनिता

रण में जन्मी
रण में पली
रण में बढ़ी
अखिर सदा के लिए
रण में रम गयी - रनिता

(पेज 28 का शेष...)

खत्म करने निकली सर्वहारा!
विश्व समाजवादी क्रांति की प्रक्रिया को
अपने खून से सींचते हुए
भारत में जनयुद्ध की
लाल पताका को बुलंद रखनेवाली
महान जनयोद्धा!
'ऑपरेशन ग्रीन हंट' को
चीरकर रख देने वाली
लाल गुरिल्ला वह
जिसने पोटेगांव क्षेत्र में
बुर्जवा सरकार के सीने पर,
लाल झंडा गाड़कर,
नई जनसत्ता की नींव रखी
जनता की लाडली!
चातगांव क्रांतिकारी जनतना सरकार की पहली अध्यक्ष
जनता को साथ लिए,
लेखामेंढा की सरकारी कवायद को
नौटंकी करार देते हुए,
सही विकास के जनपथ पर चलते हुए,
बोने से काटने तक,
लहराती धान की बालियों से
मकई के भुट्टे तक
उसका खून-पसीने का रिश्ता।
11 वर्षों का रनिता का क्रांतिकारी जीवन
असंख्य अंतर-बाह्य टकरावों से
कम्युनिस्ट मूल्य संपादित किया हुआ
आदर्श की धरोहर है।
वह गुजरी थी
कई प्रतिआक्रमण अभियानों से,
तेंदू-बांबू संघर्षों से,

जमीन समतलीकरण आंदोलन से,
भूल सुधार अभियानों से,
मार्क्सवादी अध्ययनों से
इसलिए प्रभावशाली बरगद
जब सडांध पैदा कर रहे थे,
तुम पौधा होकर भी
उसकी छाया को छेदकर
सूर्य किरण रूपी पार्टी लाईन के साथ
अडिग रही।
रनिता!
जनयुध्द के हर मोर्चे पर रणांगन में,
वह जन संगठनों में,
वह जन मिलिशियाओं के साथ,
वह जन संस्कृती में भी।
रनिता!
अब केवल एक नाम नही
एक मिसाल है!
दृढता की, बहादुरी की।
रनिता!
एक विचार है!
''दुश्मन के सामने न झुको, न डरो,
गुरिल्ला का आक्रमण का पहलू
आखिरी सांस तक भी प्रधान ही रखो
अपनी मौत को भी दुश्मन के लिए
दहशत बना दो और मृत्युंजयी बनो।''
मृत्युंजयी रनिता!
तुम जिंदा रहोगी
जनयुद्ध के हर मोर्चे में
और आगे बढ़ती रहोगी
पीएलजीए से पीएलए के सफर में।

13 सितंबर 2011

कॉमरेड रनिता एक विचार है!

– ज्वालाग्रही

20 अगस्त 2011
संसद के साऊथ ब्लॉक में
एक नाम गूंजा ऽऽ रनिता!
अकेली ने खोल दी कोबरा की पोल
3 को मौत 4 घायल।
सबसे बड़ा खतरा कहने वालों की रूह कांप गई।
गढ़चिरोली एसपी ऑफिस के फोन की घंटी
बजते ही जा रही,
सीआरपीएफ, कोबरा बटालियन के चीफ
गृह मंत्रालय, दिल्ली एवं मुंबई
सब तरफ से एक ही सवाल?
कौन है रनिता? कौन है रनिता?
कॉमरेड रनिता है उसी इतिहास की वारिस
जो आल्फ्रेड पार्क में
चंद्रशेखर आजाद ने रचाया था।
जिसे सिंगारेनी में मजदूर नेता कॉ. रमाकांत ने दोहराया।
तब अंग्रेज थे अब उसके दलाल हैं
पर कायरता एक जैसी
अकेली रनिता के विरुद्ध 600 कमांडो
गोलियों की बौछार, बमों की बरसात,
हेलिकाप्टर, माईन प्रूफ व्हेकिल का इस्तेमाल वगैरह.....
भाड़े के सैनिक क्या जाने?
लाल सैनिक के दृढ़ संकल्प को
नजदीक जो आया मौत पाया।
न उसको झांसी के गद्दी की तमन्ना थी
न नवाबी की रखवाली वह थी!
पूंजी की बुनियाद को

(बाकी पेज 26 पर...)